देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
Sept. 2025
Vol.-22, Issue-3(2)

Impact Factor
8.642

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

21वीं सदी का साहित्य : नव विमर्श

Special Issue Editor :
Dr. Poornima S.

Special Issue Co-Editor :
Dr. Anuradha P
Ms. V. Amudha

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

53.	मिट्टी से बना अन्न	डॉ. टी. अरूणा कुमारी	285–289
54.	हसीनाबाद उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. अर्चना शर्मा	290–293
55.	भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाने में कानूनी अधिकारों की भूमिका	विवेचना पाण्डेय, डॉ. सरिता भवानी मालवीय	294–300
56.	**Therigatha : Legacy and Relevance in 21st Century Indian Literature**	**Indresh Prasad Purohit**	**301-310**
57.	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट की कविताओं में यथार्थ विमर्श	डॉ. लता एस. पाटिल	311-315
58.	**Entrepreneurial Self-Efficacy and Entrepreneurial Intentions of Tribal Women: A case Study of Chhattisgarh, India.**	**Dimpal Agrawal**	**316-328**
59.	**The Anatomy of Indifference : Literature as an Antidote to Modern Insensitivity**	**Dr. S. Farhana Zabeen, Dr. I. Jane Austen**	**329-334**
60.	**Quest for Self-Identity and Independence of Women in Preeti Shenoy's The Secret Wishlist**	**Dr. R. Abeetha, Dr.A. Jayashree Prabhakar**	**335-345**
61.	**Feminine Isolation and Resistance through Nature in Anita Desai's *Fire on the Mountain***	**Ms.Greeshma N.P, Dr. I. Jane Austen**	**346-351**
62.	बैंकिंग क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमता के अनुप्रयोग की संभावनाएं और चुनौतियां	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, श्री एच पंढरीनाथ	352–355
63.	मॉरिशस के समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरन्धर के सृजनात्मक विचारों का अध्ययन	वी. अमुधा, डॉ. अनुराधा पाकलापाटि	356–360
64.	डॉ. विद्या बिंदु सिंह के कथा-साहित्य में बदलते सामाजिक सरोकार	जे. अशोक कुमार जैन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	361–365
65.	मंजरी : किन्नर विमर्श	डी श्रीदेवी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	366–369
66.	सामाजिक माध्यम और इंटरनेट पर रचनात्मकता : नए माध्यम एवं नई भाषा (बाल साहित्य के संदर्भ में)	गुरू गोविंद विश्वत, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	370–375
67.	वृद्धों के प्रति संवेदनहीन होती मनुष्यता	बी. कमला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	376–381
68.	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कथा साहित्य में बदलता हुआ सामाजिक यथार्थ	डॉ. अनुराधा पी.	382–386
69.	कृष्नचंदर कृत 'जामुन का पेड़' कहानी में प्रशासनिक विमर्श	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	387–392

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Sept. 2025 Page No. : 376-381

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वृद्धों के प्रति संवेदनहीन होती मनुष्यता

बी. कमला, पी.एच.डी (शोधार्थी),
डॉ. अनुराधा पाकलपाटि, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एण्ड एडवांस स्टडीज, विस्टास, पल्लावरम, चेन्नई।

सार :

वृद्धावस्था जीवन की अंतिम और सबसे संवेदनशील अवस्था होती है, जिसमें व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर हो जाता है। इस अवस्था में वह दूसरों पर निर्भर हो जाता है और परिवार में असंवेदनशीलता का शिकार बनता है। वृद्धावस्था में मिलने वाले अपमान, उपेक्षा और परिवार के अहंकारी व्यवहार को झेलते हैं। यह आलेख आधुनिक समाज में बढ़ती संवेदनहीनता की समस्या पर केंद्रित है, विशेष तौर पर पारिवारिक, आर्थिक और मानसिक स्तर पर। मैं काशीनाथ सिंह के श्रेहन पर रग्घू', चित्रा मुद्गल के 'गिलिगडु' और हृदयेश के 'चार दरवेश' आदि उपन्यासों में वृद्धों के प्रति परिवार में बढ़ती असंवेदनशीलता को प्रस्तुत करने की प्रयास कर रही हूँ।

बीज शब्द : वृद्ध–जीवन, संवेदनहीन, जरूरत, आत्मसम्मान, अकेलापन, उपेक्षा, सहानुभूति, अपमान, अस्तित्व, निर्भर।

प्रस्तावना :

मनुष्यता का असली रूप तब सामने आता है, जब हम समाज के सबसे निर्बल वर्ग, वृद्धों के प्रति अपना अच्छा व्यवहार को कह सकते है। वृद्धजन, जिन्होंने अपना जीवन में परिवार और समाज के लिए समर्पित किया, जब स्वयं निर्बल हो जाते हैं, तब वे सम्मान और स्नेह के नहीं, बल्कि उपेक्षा, उपहास और तिरस्कार के पात्र बनते हैं। जिस अवस्था में वृद्धों को सबसे अधिक सहारा, समझ और स्नेह की आवश्यकता होती है, पर उसी अवस्था में उन्हें अकेलापन, अपमान और असुरक्षा का सामना करना पड़ता है। इन सभी भावों से वृद्ध संवेदनहीन में फँस जाता है। अब हम संवेदनहीन की अर्थ देखेंगे।

संवेदनहीन का अर्थ :

संवेदनहीन का अर्थ, किसी ऐसे कार्य या व्यक्ति से है जिसमें समझ, उद्देश्य या भावना की कमी हो, या जो बिना कारण के किया गया हो। इसे हम दूसरे शब्दों में 'क्रूर' या 'निर्मम होना' कह सकते है।

हिन्दी साहित्य कोश (भाग–1) के अनुसार, 'संवेदना का अर्थ– संवेदना शब्द का प्रयोग सहानुभूति के अर्थ में होने लगा है। मूलतः वेदना'।[1]

संवेदनहीनता :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जो सहजीवन, संवेदनशीलता और सहानुभूति के मूल्यों पर आधारित समाज में जीता है। वर्तमान युग में भागदौड़ से भरा जीवन में, इन मानवीय गुणों का अभाव होता जा रहा है। दूसरों के दुःख–दर्द को समझने और महसूस करने की क्षमता धीरे–धीरे समाप्त होती जा रही है। यह स्थिति 'संवेदनहीनता' के बढ़ते प्रभाव की ओर संकेत करती है।

पारिवारिक संवेदहीनता :

वृद्धों को परिवार में बोझ समझा जाता है। उनकी जरूरतें, भावनाएँ और अनुभवों की उपेक्षा होती है, जिससे वे अकेलापन और तिरस्कार ग्रस्त हो जाते हैं, इन सभी विषयों को पारिवारिक संवेदनहीनता में दर्शाने का प्रयास किया है।

हृदयेश कृत 'चार दरवेश' उपन्यास में रामप्रसाद का जीवन एकाकीपन से घिरा है। पत्नी के मृत्यु के बाद वह अपनी बेटी के साथ रहता है। एक दिन उनकी कमरे में लगी बल्ब फ्यूज हो जाता है। इस बात को रामप्रसाद ने अपनी बेटी को बताया। बेटी अपनी पति से यह बात बताती है। रामप्रसाद को दामाद इस बात पर तुरंत गुस्सा होकर कहता है कि–

'तेरा बाप हरदम ततैया मिर्च बना रहता है। शिकवा-गिला के अलावा कुछ जानता नहीं। वह भी तो घर से बाहर निकलता है। साँझ के जब बैठकबाजी से लौटता है तब किसी बिजली वाली दुकान से क्यों नहीं बल्ब ले लेता है? सो क्यों? अपने टेंट से दस-बारह रूपए जो ढीले करना पड़ेंगे। बुड्ढा चालाक कौवा है।'[2]

यह प्रसंग वृद्ध की उस स्थिति को उजागर करता है, जब वह अपने ही घर में पराया, अनचाहा और अर्थहीन महसूस करने लगते हैं।

काशीनाथ सिंह कृत 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में रघूनाथ अपनी बेटी सरला की शादी के लिए दो वर देखकर रकता है। पर बेटी सरला दोनों को पसंद नहीं करती। पिता से बेटी अपनी इच्छा को प्रकट करते हुए कहती है कि वह मिर्जापुर में रेहने वाले लड़का से प्रेम करती है और शादी भी उसी से करना चाहती है। यह बात सुनकर रघूनाथ क्रोधित होकर कहता है –

'बकवास बंद करो, साफ-साफ बताओ तुम्हें शादी करनी है या नहीं?
जब करनी होगी तो कर लूँगी, आप क्यों परेशान हैं?
इसलिए कि हम जिंदा हैं, मर नहीं गए!
आप नहीं कर पाएँगे पापा! हम जानते हैं आपको, इसलिए छोड़िए!....'[3]

विवेचित प्रसंग पारिवारिक संवेदनहीन रिश्तों में बदलते मूल्यों और वृद्धों के प्रति घटती संवेदनशीलता को उजागर करता है। बेटी का व्यवहार यह दर्शाता है कि आधुनिक परिवारों में वृद्धों की भूमिका को महत्व नहीं दिया जाता, बल्कि उनके अनुभव और अधिकार को चुनौती दी जाती है। यह स्थिति वृद्धों की आत्महीनता और अकेलापन को और बढ़ा देती है।

सुदेश भारती, मिर्जापुर में रहता है, एस.डी.एम में काम करता है, एम.ए में साथ पढ़ा था। रघुनाथ गुस्से को संभाल नहीं पाया और कहने लगा कि :

'अब जाओ यहाँ से, कोई जरूरत नहीं है तुम्हारी, माँ–बाप मर गए हैं।'[4] गुस्से में इन कटु शब्दों से डाँटने लगे।

उपर्युक्त प्रसंग में रघुनाथ की प्रतिक्रिया, क्रोध से अधिक असहायता और टूटे हुए आत्मसम्मान की अभिव्यक्ति है। वह एक पिता के रूप में, अपने अधिकार, अनुभव और भावना की उपेक्षा से आहत होकर संवेदनहीनता की आघात में आ जाता है। यह स्थिति पारिवारिक संवेदनहीन रिश्तों में भावनात्मक जुड़ाव की जगह उदासीन रहने की भावना और आत्मकेंद्रित सोच पर आधारित है। इस प्रसंग से हमें यह ज्ञात होता है कि वृद्ध केवल जीवित रहते हैं, पर उनके होने का कोई मूल्य नहीं रहता।

चित्रा मुद्गल कृत 'गिलिगडु' उपन्यास में चित्रित एक वृद्ध पात्र जसवंत सिंह को बेटे–बहू की और से न तो पर्याप्त समय मिलता है, न ही आवश्यक संवेदनशीलता। इस संदर्भ में देखा जाए तो नरेन्द्र की अम्मा पहले जसवंत सिंह की जूते को साफ करके रखती है जैसे कि अबी शोरूम से खरीदकर लाया हो। साधारण आवश्यकता जूता पर फटे जूतों का बदलाव उनकी उपेक्षा के प्रतीक बन जाती है।

'जूते दिलाने की सुध नहीं आई उसे? आती तो क्या वे पाँव की बढ़ी हड्डी की टीस ओढ़े बैठे रहते!'[5]

इन संवादों से पारिवारिक संवेदनहीनता केवल बड़े–बड़े फैसले या झगड़ों में नहीं, बल्कि इन छोटी–छोटी अनदेखी चीजों में छिपी होती है, जो वृद्ध व्यक्ति के आत्मसम्मान को धीरे–धीरे समाप्त कर देती है।

वृद्धों के प्रति संवेदनहीनता परिवार के सदस्य जब अपने अनुभवी और त्यागी सदस्यों को ही अनदेखा कर देते है, तो वह अपनी जड़ों से कटने लगता है। इसलिए परिवारजनों की कर्तव्य है कि वृद्धों को सम्मान, सहारा और स्नेह देकर उन्हें जीवन के अंतिम पड़ाव पर गरिमा प्रदान करे।

आर्थिक संवेदनहीनता :

जब वृद्ध आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भर होते हैं, तो उन्हें बीमारियों का इलाज तक नहीं मिल पाता, और उन्हें अनावश्यक खर्च मानकर उनके हितों की अनदेखी की जाती है।

'चार दरवेश' उपन्यास में रामप्रसाद की बेटी और दामाद की बातचीत यह उजागर करती है कि जब वृद्ध आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भर होते हैं तो उनकी स्थिति कितनी दयनीय हो जाती है। रामप्रसाद को कुत्ता काटने पर भी उन्हें इंजेक्शन नहीं लगाये, क्योंकि उस पर लगभग दो हजार रुपये का खर्च होता है। उचित इलाज न मिलने के कारण उनकी मृत्यु हो जाती है। बेटी और जमाई इंजेक्शन को लेकर बातें करते हैं–

'बेटी, 'न जाने कैसा कुत्ता था? काटा और भाग गया। बाबूजी ने ठीक से कुत्ते को देखा भी नहीं। जरूरी हो तो इंजेक्शन लग जाए।'

जमाई बाबू, 'मेरे एक जानने वाले के बेटे को कुत्ते ने काटा था। पूरे पाँच इंजेक्शनों का कोर्स है। करीब दो हजार रुपए खर्चे में आ गए।'

बेटी, 'बाप रे। इतने महँगे? सरकारी अस्पताल में होंगे?'[6]

उपर्युक्त प्रसंग वृद्धों की आर्थिक असुरक्षा और परिवार की उदासीनता का यथार्थ चित्रण है। जब वृद्ध व्यक्ति आर्थिक रूप से अपने परिवारजन पर निर्भर हो जाता है, तो उसका स्वाभिमान, निर्णय का अधिकार और जीवन भी, दूसरों के अधीन हो जाता है। रामप्रसाद की मृत्यु यह संकेत करता है कि वृद्धों के लिए खर्च करना

जरूरत नहीं, बल्कि बोझ माना जाता है।

'गिलीगडु' उपन्यास में शालिनी जसवंत सिंह की बेटी है। उसके ब्याह के समय पहने हुए गहनों को लॉकर में रखने के लिए अपने भाई नरेंद्र से कहती है। तब नरेंद्र को उस लॉकर का खर्च फिजूलखर्ची समझता है। इस विषय पर जसवंत जी को ऐसा लगा कि गहनों के लिए करने वाले खर्च को ही ऐसा सोचता है नरेंद्र, तो उनके लिए की जाने वाले खर्च को कैसा सोचेगा। इस संदर्भ में –

'साढ़े छह सौ रुपए किराया मामूली रकम नहीं बढ़ती महंगाई के दिनों में। फिजूलखर्ची से बचना चाहिए बाबूजी।'

बाबू जसवंत सिंह ने चिकनी चुपड़ी से किनारा किया।

लॉकर का किराया नरेंद्र को फिजुलखर्ची लग रहा, टेलीफोन कस्टडी में रखा हुआ है, बंगले को हाउस टैक्स भरना पड़ा पड़ रहा है, मोहल्ले के चौकीदार की तनख्वाह का हिस्सा देना पड़ रहा है। यह सब फिजूलखर्ची नहीं?'[7]

प्रस्तुत प्रसंग वृद्ध की अर्थिक निर्भरता के कारण घटते सम्मान और संवेदनाहीन को दर्शाता है। जसवंत सिंह के लिए लॉकर का किराया सिर्फ एक धनराशि नहीं, बल्कि स्वाभिमान की रक्षा का प्रतीक है। जब परिवार के सदस्य उनके खर्च को शफिजूलखर्चीश कहकर नकार देते हैं। जसवंत सिंह स्वयं को बोझ, व्यर्थ और उपेक्षित महसूस करने लगते हैं। यह दृश्य हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि आर्थिक संवेदनहीनता केवल धन की बात नहीं, बल्कि रिश्तों की गरिमा और वृद्धों के आत्मसम्मान से जुड़ा हुआ एक प्रश्न है।

मानसिक रूप से संवेदनहीनता :

अपनों के व्यवहार से वृद्ध मानसिक रूप से टूट जाते हैं। उनके आत्मसम्मान और भावनात्मक जरूरतों को नकारा जाता है, जिससे वे जीते जी मरने जैसी स्थिति में आ जाते हैं, मानसिक रूप से संवेदनहीनता इन विषयों पर दर्शाने का प्रयास किया है।

'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में रघुनाथ की बेटी सरला, अपने घर से बाहर निकल कर मिर्जापुर में रहने वाले चमार जाति के आदमी सुरेश भारती के साथ शादी कर लेती है। यह रघुनाथ के मन को चोट पहुँचाती है। लेखक रघुनाथ की मनःस्थिति को इस तरह दशाते हुए–

'सरला चली तो गई, लेकिन सुकून और चौन लिए गई। रघुनाथ कई रातों तक सो नहीं सके। उन्हें नींद ही नहीं आ रही थी। जाने किन जन्मों का पाप था, जो इस जन्म में भोग रहे थे। बच्चों को ऐसे संस्कार कहाँ से मिले–यह उनकी समझ से बाहर था। संजय को कोई नहीं– न ठाकुर, न बामन, न भूमिहारय मिली तो लाला की लड़की! फिर भी वे इस लायक थे कि मुँह दिखा सकें! लेकिन यह सरला? वे किस मुँह दिखाएँगे? कहाँ मुँह दिखाएँगे?'[8]

उपर्युक्त प्रसंग वृद्धावस्था में झेली जा रही मानसिक संवेदनहीनता का दुखद चित्रण है। अपने संतान द्वारा पिता की भावनाओं और मानसिक पीड़ा की पूर्ण उपेक्षा इस बात की पुष्टि करती है कि आधुनिक परिवारों में वृद्धों की भावनाओं का कोई मूल्य नहीं मिलता। रघुनाथ की नींद न आने का मतलब यह है कि उनका आंतरिक–मन संवेदनहीनता से भरा हुआ है।

'गिलिगडु' उपन्यास में जब जसवंत सिंह और कर्नल स्वामी के बीच वार्तालाप के समय जसवंत सिंह ने कर्नल स्वामी से ऐसे सवाल पूछे की मृत्यु के बारे में उनका क्या अभिप्राय है। इस संदर्भ में :–

'उनकी अस्थिर मनःस्थिति से उन्हें खींच निकालने के अभिप्राय से कर्नल स्वामी ने सहसा उन्मुक्त ठहाका–भर मखौल उड़ाने वाले अंदाज में जवाब दिया–अव्वल तो वे मौत के बारे में सोचते ही नहीं है। उस पर सोचना उन्हें जरूरी भी नहीं लगता। मौत जब आएगी, आ जाएगी। किसी भी शक्ल में आ जाए। रगड़ेगी हफ्ता, महीना, साल या अचानक झपाटे से उठा लेगी। उठा ले। मगर उन कुछेक कष्टकर दिनों की कल्पना में रात–दिन अधमरे होकर जीना जिंदगी का मजाक उड़ाना नहीं! 'सर, लिव लाइक शेर... अपनी तरह से। अपनी शर्तों पर!'[9]

उपर्युक्त प्रसंग के दौरान मृत्यु के विषय पर कर्नल स्वामी का अभिप्राय यह है कि मृत्यु के डर में जीना व्यर्थ है। जीवन को निडर होकर, पूरे आत्मविश्वास के साथ, नियमानुसार अपने तरीके से जीना चाहिए– जैसे एक शेर जीता है। कर्नल स्वामी अपने मित्र जसवंत सिंह की अवसाद से उन्हें बाहर निकालने की कोशिश कर रहे हैं।

'चार दरवेश' उपन्यास में रामप्रसाद को कुत्ता काटने से रेबीज (कुत्ता काटने से होती बीमारी) हो जाता है। पर उनके जीवन में इस घटना से पहले ही बेटी–दामाद के कठोर व्यवहार से पैदा हुआ रेबीज हो गया है। रिश्तों से हुई रेबीज की पीड़ा अधिक कष्टदायक है और उसी क्षण में ही वे मानसिक रूप से मर चुके थे और वास्तव में शारीरिक रूप से अभी गुजरे। इस संदर्भ में :–

'कुत्ता काटने से पैदा रेबीज से पहले ही उनको अपने बेटी–दामाद के काटे से पैदा रेबीज हो चुका था। अपनों के काटे से पैदा रेबीज की पीड़ा ज्यादा तकलीफदेह होती है, असह्य बनती किस्म की, और व्यक्ति अपनी मृत्यु की कामना करने लगता है। रामप्रसाद मानसिक रूप से काफी पहले ही मृत हो चुके थे, शारीरिक रूप से बाद में हुए।'[10]

विवेचित प्रसंग हमें बताता है कि वृद्धों के प्रति संवेदनहीनता न केवल उनकी शारीरिक में ही नहीं बल्कि मानसिक और भावनात्मक मृत्यु का कारण बन सकती है।

निष्कर्ष :

काशीनाथ सिंह कृत 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास वृद्धावस्था के जीवन यात्रा में अकेलेपन के साथ गुजरने की कथा है। चित्रा मुद्गल कृत 'गिलिगडु' उपन्यास वृद्धावस्था की साथीपन और गहन सच्चाइयों को उजागर करता है। हृदयेश कृत 'चार दरवेश' उपन्यास वृद्धावस्था समाज में हो रही व्याप्त विसंगतियों की तस्वीर को उकेरा है। प्रस्तुत उपन्यासों में वृद्धों की विडंबनाओं, बाजारवाद, भूमंडलीकरण आदि से रिश्तेदारों एवं संबंधों की दूरियाँ, कटुता, क्रुरता, दूसरों के दुख को न समझने की स्थिति को मार्मिक रूप से दर्शाती हैं। इन सभी विषयों के कारण वृद्ध–जीवन की यात्रा कठिन हो जाती है। प्रस्तुत आलेख द्वारा प्रदर्शित की गई संवादों एवं घटनाओं से यह स्पष्ट है कि संवेदनहीनता केवल सामाजिक विकृति नहीं, बल्कि एक गहरी मानवीय दुखद प्रवृत्ति बन चुकी हैं। बुढ़ापा–जीवन की अंतिम अवस्था है। आज के नई पीढ़ी, कल के वृद्ध होंगे। इसलिए हमारा व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि हम वृद्धों को सम्मान एवं अपनात्व देना चाहिए। वृद्धों के संवेदनहीन से संवेदनशुन्य होने की प्रयत्न करें।

संदर्भ :

1. धीरेन्द्र वर्मा (सं), हिन्दी साहित्य कोश भाग–1 (पारिभाषित शब्दावली), ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, सं–2020, पृ.सं–863
2. हृदयेश, चार दरवेश, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सं. 2013, पृ.सं–16
3. काशीनाथ सिंह, रेहन पर रग्घू, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, सं. 2010, पृ.सं–52
4. काशीनाथ सिंह, रेहन पर रग्घू, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, सं. 2010, पृ.सं–53
5. चित्रा मुद्गल, गिलिगडु, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2002, पृ.सं–19
6. हृदयेश, चार दरवेश, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सं. 2013, पृ.सं–140
7. चित्रा मुद्गल, गिलिगडु, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2002, पृ.सं–95
8. काशीनाथ सिंह, रेहन पर रग्घू, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, सं. 2010, पृ.सं–54
9. चित्रा मुद्गल, गिलिगडु, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2002, पृ.सं–63
10. हृदयेश, चार दरवेश, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सं. 2013, पृ.सं–143